ईक्कीसवीं सदी में ई–लाईब्रेरी का प्रयोग

आरती कुमारी[1], नीतु कुमारी[2], सुनील कुमार[3]
[1,2,3]आइसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड) भारत

सार
विनोबा भावे विश्वविद्यालय तथा आइसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड के वर्तमान ई–लाईब्रेरी का डेटा संग्रहण तथा वहाँ के कुछ विभागों के परिसंचरण विभाग एवं उपयोक्ताओं (Users) के द्वारा उपयोग किए गए ई–लाईब्रेरी का डेटा संग्रहण अध्ययन किया गया है। COVID-19 से अबतक ई–लाईब्रेरी का प्रयोग सूचना विस्फोट के रूप में सामने आ रहा है। जिससे ईक्कीसवीं सदी में ई–लाईब्रेरी का महत्व एवं प्रयोग अतिआवश्यक महसूस किया जा रहा है।

I परिचय

विनोबा भावे विश्वविद्यालय तथा आइसेक्ट विश्वविद्यालय के उपयोक्ताओं (Users) के द्वारा ईक्कीसवीं सदी में ई–लाईब्रेरी के उपयोग में पिछले कुछ वर्षो से तेजी आई है। कई विभागों में इन्टरनेट की व्यवस्था में कमी पाई गई है, जिसको दूर करने के लिए अग्रेत्तर कार्रवाई की जा रही है।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय में ई–लाईब्रेरी का प्रयोग करने के लिए शोध सिन्धु का उपयोग किया जा रहा है। यह UGC के NIFLIBNET द्वारा लिया गया है। वर्तमान में इसमें पत्रिकाओं (Journals) से संबंधित सारे विषयों की जानकारी प्राप्त की जा रही है। यह शोधार्थियों के लिए एक बहुत ही अच्छी प्लेटफार्म के रूप में उभर कर सामने आई है। National Digital Library e-Resources के द्वारा World e-Book Library को जोड़ा गया है। e-library की प्रक्रिया को सरल बनाने कि लिए OPAC (Online Public Access Catalogue) बहुत ही उपयोगी माध्यम है। इसके माध्यम से पाठक स्वयं ही अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तकों की खोज करता है तथा अपने एवं पुस्तकालय कर्मियों के समय को बचाता है। OPAC में पाठकों की सुविधा के लिए सभी तरह से सर्च करने का Option रहता है। User Accession Number, Author's Name, Title of Book, Edition, Publication Name, ISBN, Classification Number, Book Number, Editor's Name के द्वारा इनमें से किसी भी Data का उपयोग कर पुस्तकों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है।

अतः पुस्तकालयों में Catalogue का महत्वपूर्ण उपयोग है। जिसको Computer के द्वारा शीघ्रता से डेटाबेसों का निर्माण कर पूर्ण किया जाता है तथा खोज प्रक्रिया तथा पुनः प्राप्ती द्वारा सूचनाओं को उपयोगकर्ता को पुनः प्रदान किया जाता है। प्रत्येक संग्रहीत प्रलेख के लिए एक अभिलेख तैयार किया जाता है जिससे प्रलेख से संबंधित सूचनाएँ डेटा के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में निवेशित की जाती है। यह कार्य मार्क प्रारूप (Marc Format) या सामान्य संप्रेषण प्रारूप (Common Communication Format) पर आधारित निर्दिष्ट प्रारूप के अनुसार किया जाता है। जिससे Networking के अंतर्गत Online Catalogue खोजी जा सके।

Computer Cataloguing के लिए आवश्यक फाइलें निम्नलिखित हैं–

(क) **Master File :–** ग्रन्थ अवाप्ति File में आवश्यक परिर्वतन कर इसका निर्माण किया जाता है।
अनुक्रमणीकृत फाइलः– विभिन्न अभिगम पद जैसे– लेखक, शीर्षक, विषय आदि के आधार पर सूचना की व्यवस्था के द्वारा यह File प्राप्त होता है।

(ख) **प्राधिकृत फाइल व निर्देशिका (Authority File):–** इसमें प्रकाशित, संस्था, भाषा आदि कि आधार पर प्रलेखों की व्यवस्था होती है।

(ग) **परिभाषाः –** पुस्तकालय सूची Library catalogue की परिभाषा को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। पुस्तकालय के

पाँच सुत्र के सदंर्भ मे कहा जा सकता है –
"Library catalogue is a key of Library collection (पुस्तकालय सूची पुस्तकालय संग्रहों की कुंजी है। डॉ० रंगनाथन के अनुसार – "ग्रंथालय सचूी एक उपकरण है जो पाठकों को ग्रंथालय मे सग्रंहित पाठ्य सामग्री के सम्बंध मे सचूना प्रदान करता है। " ("It is a tool which gives information about the contents of the library").

चार्ल्स एमी कटर ने इसकी परिभाषा देते हुए लिखा है – "पुस्तकालय सूची पुस्तकों की एक तालिका है जो किसी सुनिश्चित योजना के अनुसार व्यवस्थित होती है।" ("A catalogue is a list of books which is arranged on some definite plan.")

जेम्स ब्राउन के अनुसार– "ग्रंथों तथा उनमें वर्णित विषय सामग्री खोजने के लिए सुव्यवस्थित तालिका या कुँजी है।" उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि Library catalogue पुस्तकालय में औजार (Tool) की तरह कार्य करता है तथा यह क्रमगत तार्किक पुस्तकों की सचूी है। जो अलग–अलग पुस्तकालय के लिए अलग–अलग निर्धारित होती है चाहे उसका भौतिक तथा आंतरिक स्वरूप जैसा भी हो।

II उद्देश्य

Catalogue का प्रमुख उद्देश्य यह होता है कि पाठक को उसकी मनोवांछित पुस्तक मिल जाए या यों कहें पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्रों की रक्षा हो सके। डॉ० रंगनाथन के पुस्तकालय के पाँच नियम को ध्यान में रखकर पुस्तकालय सूची का उद्देश्य निम्नलिखित होते हैः –

(क) पुस्तक का पुर्ण उपयोग,
(ख) प्रत्येक पाठक को उसके पुस्तक से मिलाना,
(ग) प्रत्येक पुस्तक को उसके पाठक से मिलाना,
(घ) पाठक का समय बचाना,
(च) पुस्तक प्रचुरता की स्थिति में संग्रह पर नियंत्रण के लिए।

III निष्कर्ष

किसी भी पुस्तकालय के चार महत्वपूर्ण घटक–1. प्रलेख, 2. उपयोगकर्ता, 3. कर्मचारी और भवन तथा 4. उपकरण होते हैं। ये सभी घटक एक आधुनिक पुस्तकालय की स्थापना में सहायक होते हैं और एक दूसरे के पूरक होते हैं। कोई भी पुस्तकालय यदि आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं, योग्य प्रशिक्षित कर्मचारी हैं किन्तु यदि उपयोगकर्ताओं को संतुष्ट करने हेतु उपयुक्त ज्ञान और सूचना सामाग्री का अच्छा संग्रह नहीं है तथा इ–लाईब्रेरी सेवाओं की अच्छी व्यवस्था नहीं हो तो उसे पुस्तकालय की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। आधुनिक पुस्तकालय में स्तरीय प्रलेखों का परिसंचरण सेवाऐं अत्यंत आवश्यक तथा महत्वपूर्ण होता है। जो उपयोगकर्ताओं की माँग और आवश्यकता की पूर्ति कर सके।

वर्तमान समय में उपयोगी और महत्वपूर्ण सूचना मात्र परम्परागत प्रलेखों अर्थात पुस्तकों और पत्रिकिओं आदि में ही उपलब्ध नहीं है बल्कि दूसरे प्रारूपों जैसे– पाण्डुलिपि, पैम्पलैट्स, श्रव्य'दृश्य सामाग्री (Audio Visual Material)] Microform, Map, PDF Form) अर्थात तथा इ–लाईब्रेरी की सेवाएँ, Library Automation आदि के रूप में पाई जाती है। इस प्रकार के प्रलेखों को अपुस्तकीय अथवा अपाम्परागत प्रलेख मिलकर "सूचना अभिलेख "(Information Records) अथवा "सूचना संसाधन (Information Resources) के नाम से जाने जाते हैं। अतः एक आधुनिक पुस्तकालय को अपने सूचना संसाधनों का संग्रह वर्तमान और भविष्य दोनों प्रकार के उपयोगकर्ताओं की माँग और आवश्यकता को ध्यान में रखकर समृद्ध करना चाहिए। इसके साथ यह भी ध्यान देना चाहिए कि इन प्रलेखों में उपलबध सूचना प्रासंगिक, नवीन, अद्यतन तथा प्रमाणिक हो।

किसी भी पुस्तकालय की वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं का ई–लाईब्रेरी की सेवाओं के उपयोग को विकसित करने के लिए अधिक से अधिक करना है। जिसका मूल आधार पुस्तकालय के उद्देश्यों की पूर्ति से होता है। किसी भी पुस्तकालय में चाहे वह विभागीय हो अथवा कोई अन्य, सभी तरह के पुस्तकालयों में ई–लाईब्रेरी की सेवाओं के बिना वहाँ उपस्थित पुस्तकों का सही से उपयोग असंभव होता है। ई–लाईब्रेरी की सेवाओं से पुस्तकों के उपयोग को आसानी बनाया जा सकता है। कौन सी पुस्तकों का उपयोग अधिक हो रहा है तथा कौन सी पुस्तकों का उपयोग न के बराबर हो रहा है। जिन पुस्तकों को उपयोग कम हो रहा होता है उस पुस्तकों की आवश्यकता पुस्तकालय में नहीं होनी चाहिए। उसके विपरीत यदि जिस पुस्तकों का उपयोग अधिक हो रहा हो उस पुस्तकों को पाठकों के लिए उपलब्ध कराना पुस्तकालय में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

All Department report Jan 2019 To March 2020
e- library Book essue / Renew & Return
Chart

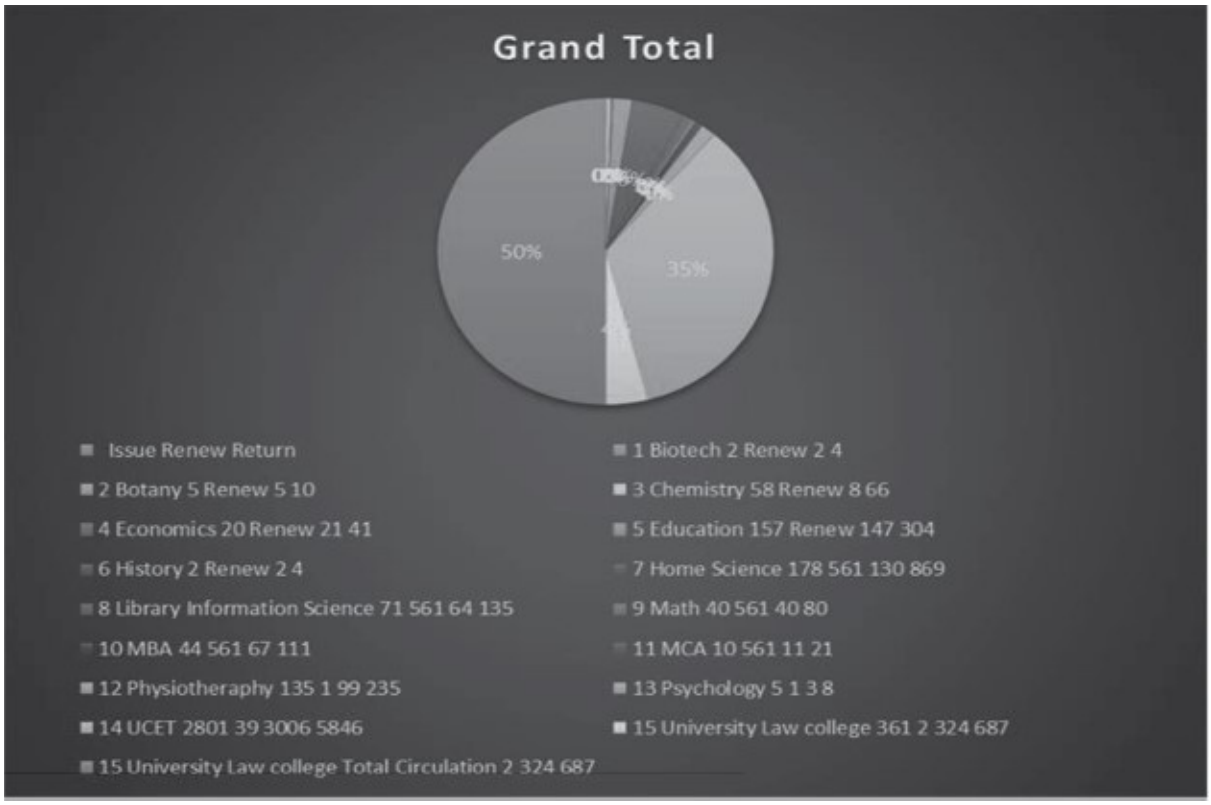

REFERENCES
(MLA Style)

[1] "यूजीसी अधिनियम–1956"(पीडीएफ) A mhrd.gov.in/A सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। 1 फरवरी 2016 को लिया गया। (to website)

[2] Pal, Nirmalendu (2017). Implementation of RFID technology in library. International journal of digital library services. 7(2), 70-79. www.ijodls.in

[3] शर्मा, बी. के. और सिंह, डी. वी. शैक्षणिक पुस्तकालय प्रणाली. आगरा : वाई0 के0 पब्लिशर्स, 2012.

[4] शर्मा, बी. के, ठाकुर, यू. एम. और त्रिपाठी, मनीश. एम लिब आई एस सी गाईड. आगरा : वाई0 के0 पब्लिशर्स, 2017.